02 अक्टूबर 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 10
अक्टूबर (प्रथम), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शाश्वत दशलक्षण महापर्व सानन्द सम्पन्न

(10 से 19 सितम्बर तक आयोजित दशलक्षण महापर्व के कार्यक्रमों के कुछ विशिष्ट समाचार सितम्बर द्वितीय अंक में प्रकाशित किए जा चुके है शेष समाचार निम्न प्रकार है)

१. अर्हं पाठशाला : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला द्वारा दशलक्षण महापर्व के अवसर पर e-बाल दशलक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें प्रात: श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं श्री दशलक्षण महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

रात्रिकालीन कार्यक्रमों में श्री जिनेन्द्र भक्ति, अर्हं अध्यापकों द्वारा **आओ जाने दशलक्षण धर्म** के अंतर्गत १-१ धर्म पर सारगर्भित वक्तव्य के पश्चात् विशेषज्ञ विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अंकुरजी शास्त्री, पण्डित संयमजी शास्त्री, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल, पण्डित अच्युतकान्तजी शास्त्री, विदुषी स्वानुभूतिजी शास्त्री एवं विदुषी प्रतीतिजी शास्त्री द्वारा जीवनोपयोगी विषयों पर विशेष सेमिनारों का आयोजन किया गया।

साथ ही अर्हं विद्यार्थियों द्वारा प्रत्येक धर्म पर वीडियो क्लिप प्रस्तुत की गईं एवं पण्डित सुदीपजी शास्त्री द्वारा अर्हं दशलक्षण क्विज़ का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम पं. आकाशजी शास्त्री अमायन एवं पं. समकितजी शास्त्री खनियाँधाना के संयोजन में हुआ।

२. चैतन्यधाम (अहमदाबाद) : यहाँ अनेक संस्थाओं की सहभागिता से दशलक्षण महापर्व का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत प्रातः पूजन-विधान एवं पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के साथ पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री चैतन्यधाम के सान्निध्य में प्रतिदिन 6 व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

।।मंगल आमंत्रण।। ।।अपूर्व अवसर।।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आयोजित

24 वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर

रविवार, 10 अक्टूबर से रविवार, 17 अक्टूबर 2021 तक

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि देश के मूर्धन्य एवं विषय-विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों पर गहराई से तत्त्वचर्चा व अध्ययन का लाभ आप सभी को प्राप्त होगा।

अत: आप इस आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर में अपने इष्ट-मित्र एवं परिजनों के साथ ऑनलाईन उपस्थित होकर अवश्य धर्मलाभ लेवें। तथा **www.ptst.live** पर रजिस्ट्रेशन अवश्य करें।

आप सभी को शिविर का हार्दिक आमंत्रण है

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की समस्त गतिविधियाँ, लाइव कार्यक्रम, आध्यात्मिक प्रवचन, मधुर स्वरबद्ध भजन-पूजन तथा नित नई रचनाओं का लाभ लेने हेतु SUBSCRIBE करें
हमारा यूट्यूब चैनल
Pandit Todarmal Smarak Trust

(23) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

चतुर्थ अध्याय का सार (मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का निरूपण)
(गतांक से आगे...)

मिथ्याचारित्र का स्वरूप....

मिथ्यात्व के उदय सहित चारित्रमोहनीय कर्म के उदय में होने वाले कषायभाव का नाम मिथ्याचारित्र है। यहाँ स्वरूप में प्रवृति न होकर झूठी विभावरूप प्रवृत्ति होती है, इसी का नाम मिथ्याचारित्र है। रागी-द्वेषी होकर प्रवृत्ति करना चाहता है। मन में आए वह सब करना चाहता है। कार्य तो सारे करना चाहता है; लेकिन इसके चाहने से होता कुछ भी नहीं है। पण्डितजी इसी बात को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि कषाय भाव करना तो ऐसा है, जैसे जल का बिलोना। जैसे- क्रोध के उदय में किसी का बुरा करने के भाव होते हैं; लेकिन बुरा होना तो उसकी भवितव्यता के आधीन है। इस प्रकार अन्य कषायों के सम्बन्ध में भी पण्डितजी ने भवितव्यता की ही बात कही थी; अर्थात् इसके चाहने से कुछ भी नहीं होता। यह जीव जबरदस्ती कषायभाव के अनुसार प्रवृत्ति करता है, उससे होता तो कुछ है नहीं, स्वयं ही दुखी होता है। अत: इस झूठी प्रवृत्ति को ही मिथ्याचारित्र कहते हैं।

इष्ट-अनिष्ट की मिथ्याकल्पना....

कषायभाव होने पर परपदार्थों को इष्ट-अनिष्ट मानता है; परन्तु पदार्थों को इष्ट-अनिष्ट मानना भी मिथ्या है; क्योंकि कोई भी पदार्थ इष्ट-अनिष्ट होता ही नहीं है। अब इसी बात को समझाते हैं - जो अपने को सुखदायक-उपकारी हो, उसे इष्ट कहते हैं तथा जो अपने को दुखदायक-अनुपकारी हो, उसे अनिष्ट कहते हैं।

● एक ही वस्तु किसी को सुखदायक लगती है और किसी को दुखदायक लगती है। जैसे- एक कमरे में बैठे हुए दो व्यक्तियों में से किसी को A.C. में सर्दी लगती है और दूसरे को गर्मी लगती है। घर में कोई वस्तु खरीदनी हो, तो एक कहता है कि यह वाली लेनी चाहिए और दूसरा कहता है कि नहीं यह वाली लेनी चाहिए- ऐसे प्रसंग हमारे जीवन में अनेक बार बनते ही रहते हैं।

● कई बार तो ऐसा भी देखा जाता है कि एक ही पदार्थ एक ही व्यक्ति को किसी काल में अच्छा लगता है और किसी काल में बुरा लगता है। यहाँ वस्तु भी वही है और व्यक्ति भी वही है; परन्तु काल बदल गया। जो वस्तु अभी अच्छी लग रही थी, वही वस्तु १५ मिनट बाद, १ घंटे बाद बुरी लगने लगती है; सुख से दुखरूप लगने लगती है और दुख से सुख रूप लगने लगती है। जो कपड़े हमें गर्मियों में अच्छे लगते हैं, वही सर्दियाँ आ जाने पर बुरे लगने लगते हैं। जो व्यक्ति मित्र जैसा लगता था, वही कुछ समय बाद शत्रु जैसा लगने लगता है। जिस काम को करने में हमें पहले बहुत आनन्द आता था, वही काम कुछ दिनों बाद बुरा लगने लगता है।

यहाँ कोई कहे की दुनिया में अनेक ऐसे पदार्थ हैं जो मुख्यरूप से अच्छे ही कहे जाते हैं। जिन्हें पूरी दुनिया एक स्वर में अच्छा ही कहती है, जैसे- प्रकाश आदि। बहुत से पदार्थ ऐसे भी हैं, जिन्हें पूरी दुनिया एक स्वर में बुरा ही कहती है, जैसे- गाली आदि अपशब्द। इन्हें तो इष्ट-अनिष्ट माना ही जा सकता है?

इसका समाधान करते हुए पण्डितजी कहते हैं कि पूरी दुनिया जिस प्रकाश को एक स्वर में अच्छा कहती है, वही प्रकाश उल्लू आदि को बुरा लगता है तथा जिन गाली आदि अपशब्दों को सारी दुनिया एक स्वर में बुरा कहती है, वह भी विवाह आदि के प्रसंगों में मधुर लगते हैं। यदि कोई पदार्थ इष्ट होता है, तो सभी के लिए इष्ट होना चाहिए और यदि कोई पदार्थ अनिष्ट होता है, तो सभी के लिए अनिष्ट होना चाहिए; परन्तु ऐसा तो देखने में नहीं आता। अत: कोई भी पदार्थ इष्ट या अनिष्ट नहीं होता यह जीव अपनी कल्पना में ही उसे इष्ट और अनिष्ट मानता है।

यहाँ कोई कहे कि ऐसा प्रत्यक्ष देखने में आता है कि किसी को स्त्री पुत्रादिक सुखदायक होते हैं और किसी को दुखदायक होते हैं तथा किसी को व्यापारादि करने से लाभ होता है और किसी को नुकसान होता है - इससे पदार्थों के इष्ट-अनिष्टपने की सिद्धि होती है?

इसके **समाधान** में कहते हैं कि जब पदार्थ सुखदायक व दुखदायक होते हैं, तो वह अपने आप नहीं होते; अपितु पुण्य-पाप के उदय के अनुसार होते हैं। जिसके पुण्य का उदय होता है, उसको पदार्थों का संयोग सुखदायक लगता है तथा जिसके पाप का उदय होता है, उसको पदार्थों का संयोग दुखदायक लगता है। स्वयं के कर्म का उदय होने पर ही पदार्थ जीव के सुख-दु:ख में निमित्त बनते हैं। जब पुण्य का उदय चला जाता है, तो सुखदायक पदार्थ भी दुखदायक हो जाता है। जब पुण्य का उदय आ जाता है, तब दुखदायक पदार्थ भी सुखदायक हो जाता है। इसमें बाह्य पदार्थों की कुछ भी भूमिका नहीं है। इसलिए पदार्थों को इष्ट-अनिष्ट मानना मिथ्या है।

इसप्रकार मिथ्याचारित्र का वर्णन करते हुए पदार्थों को इष्ट-अनिष्ट मानकर उनमें राग-द्वेष करने का निषेध किया। **(क्रमश:)**

कोई किसी का क्यों करे..?

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(हरिगीत)

कोई किसी का क्या करे, कोई किसी का क्यों करे?
सब द्रव्य अपने परिणमन के जब स्वयं जिम्मेवार हैं।।
जिस देह में आतम रहे, जब वही अपनी ना बने।
तब शेष सब संयोग भी अपने बताओ क्यों बने?।।१।।

एक अपना आतमा ही स्वयं अपनेरूप है।
और सब संयोग तो बस एकदम पररूप हैं।।
संयोग की ही भावना बस भवभ्रमण का हेतु है।
और अपनी भावना ही एक मुक्ति सेतु है।।२।।

संयोग बदलें निरंतर इस दुःखमयी संसार में।
उनको मिलाना असंभव है सुनिश्चित संसार में।।
संयोग होते हैं सहज[१] पर करोड़ों में एक भी।
मिल जाय तो मिल जाय रे अत्यन्त दुर्लभ जानिये।।३।।

संयोग मिलना–बिछुड़ना ना है किसी के हाथ में।
पूरी तरह हैं सुनिश्चित सब ही अनादिकाल से।।
इस सत्य को स्वीकार करना ही सहज पुरुषार्थ है।
सहज में ही सहज रहना एक ही परमार्थ है।।४।।

बस एक सुख का मूल है निज आत्म में अपनापना।
स्वयं को पहिचानना अर स्वयं को निज जानना।।
स्वयं में ही समा जाना स्वयं में ही लीनता।
स्वयं के सर्वांग में ही स्वयं की तल्लीनता।।५।।

यही सच्चा धर्म है अर यही सच्ची साधना।
है आत्मा की साधना अर आत्म की आराधना।।
निज आत्मा में रमणता निज आत्मा का धर्म है।
निज आत्मा के धर्म का इक यही सच्चा मर्म है।।६।।

सद्धर्म का यह मर्म है सब स्वयं में तल्लीन हों।
स्वयं की तल्लीनता से रहित जन भवलीन हों।।
भवलीन संसारी सदा भव में भटकते ही रहें।
निज आतमा के भान बिन सुख को तरसते ही रहें।।७।।

ज्ञानमय आनन्दमय यह अमल निर्मल आतमा।
सद्ज्ञान दर्शन चरणमय सुख–शान्तिमय यह आतमा।।
जो शक्तियों का संग्रहालय गुणों का गोदाम है।
आनन्द का है कंद अर आराधना का धाम है।।८।।

आराधना का धाम है सुख साधना का धाम है।
और अपनी आत्मा का एक ही ध्रुवधाम है।।
एक ही ध्रुवधाम है बस एक ही सुखधाम है।
अध्रुव सभी संयोग बस निज आतमा ध्रुवधाम है।।९।।

ध्रुवधाम में एकत्व रे ध्रुवधाम की आराधना।
ध्रुवधाम में सर्वस्व अर ध्रुवधाम की ही साधना।।
साधना आराधना आराधना अर साधना।
हे भव्यजन ! नित करो अपने आत्म की आराधना।।१०।।

(दोहा)

आतम ही ध्रुवधाम है आतम आतमराम।
आतम आतम में रमें हूँ मैं आतमराम।।११।।

१. मनोनुकूल संयोगों का मिलना असंभव ही है। सहज रूप से कदाचित् मिल भी जावे तो करोड़ों में एकाध ही मिलता है।

साप्ताहिक गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर की गतिविधियों के अन्तर्गत दिनांक 28–29 अगस्त को निदान का स्वरूप विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. ज्योतिजी सेठी, जयपुर ने की। सत्र का संचालन सुस्मित जैन, सेमारी एवं मंगलाचरण अभिषेक जैन, महावीरजी ने किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड़, जयपुर ने की। सत्र का संचालन सर्वज्ञ जैन एवं मंगलाचरण स्वयं जैन ने किया।

श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में प्रथम सत्र से दिव्यांश जैन, बड़नगर एवं द्वितीय सत्र से अनिमेष भारिल्ल, राघोगढ़ चुने गए।

उक्त दोनों सत्रों में निर्णायक की भूमिका का निर्वहन पण्डित अमनजी शास्त्री, लोनी ने एवं आभार प्रदर्शन महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
द्वितीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तृतीय	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चतुर्थ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सप्तम	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
अष्टम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

जैनपथप्रदर्शक : जैनतिथिदर्पण

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

१ जनवरी, २०२२ से ३१ दिसम्बर, २०२२ तक

श्री वीर निर्वाण सं. २५४८-२५४९ : विक्रम सं. २०७८-७९

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
द्वितीय	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तृतीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चतुर्थ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सप्तम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
अष्टम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

मास →	पौष (१ जनवरी से १७ जनवरी)				माघ (१८ जनवरी से १६ फरवरी)				फाल्गुन (१७ फरवरी से १८ मार्च)				चैत्र (१९ मार्च से १६ अप्रैल)				वैशाख (१७ अप्रैल से १६ मई)				ज्येष्ठ (१७ मई से १४ जून)				आषाढ़ (१५ जून से १३ जुलाई)				श्रावण (१४ जुलाई से १२ अगस्त)				भाद्रपद (१२ अगस्त से १० सित.)				आश्विन (११ सित. से ९ अक्टू.)				कार्तिक (१० अक्टू. से ८ नव.)				मार्गशीर्ष (९ नव. से ८ दिसम्बर)				पौष (९ दिस. से ३१ दिस.)			
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	X	X	३	सो	१८	मं	२×	बु	१७	गु	३	गु	१९	श	२	श	१७	र	१ मई	र	१७×	मं	३१ जून	मं	१५	बु	२९/३०	बु/गु जुलाई	१४✱	गु	२९	शु	१२×	शु	२८	र	११	र	२६	सो	१०	सो	२६	बु	९	बु	२४	गु	९	शु	२४	श
द्वितीया	X	X	४	मं	१९	बु	२	बु	१८	शु	४	शु	२०	र	३	र	१८	सो	२✱	सो	१७	मं	१	बु	१६	गु	१	शु	१५	शु	३०	श	१३✱	श	२९	सो	१२	सो	२७	मं	११	मं	२७	गु	१०	गु	२५	शु	१०	श	२५×	र
तृतीया	X	X	५	बु	२०	गु	३	गु	१९	श	५	श	२१×	सो	४	सो	१९	मं	३✱	मं	१८	बु	२	गु	१६×	गु	२	श	१६	र	३१ अगस्त	र	१४	र	३०	मं	१३	मं	२८	बु	१२	बु	२८	शु	११	शु	२६	श	११	र	२५	र
चतुर्थी	X	X	६	गु	२१	शु	४	शु	२०	र	६	र	२१	सो	५	मं	२०	बु	४/५	बु/गु	१९	गु	३	शु	१७	शु	३	र	१७	र	१	सो	१५	सो	३१✱ सितम्बर	बु	१४	बु	२९	गु	१३	गु	२९×	श	१२	श	२७	र	१२	सो	२६	सो
पंचमी	X	X	७	शु	२२	श	५	श	२१	सो	७	सो	२२	मं	६	बु	२१	गु	६	शु	२०	शु	४✱	श	१८	श	४	सो	१८×	सो	२	मं	१६	मं	१	गु	१५	गु	३० अक्टूबर	शु	१४	शु	२९	श	१३	र	२८	सो	१३	मं	२७	मं
षष्ठी	X	X	८	श	२३	र	६	र	२२	मं	८	मं	२३	बु	७	गु	२२	शु	७	श	२१	श	५	र	१९	र	५	मं	१८	सो	३	बु	१७	बु	२	शु	१६	शु	१	श	१५	श	३०	र	१४	सो	२९	मं	१४	बु	२८	बु
सप्तमी	X	X	९	र	२४	सो	७	सो	२३	बु	९	बु	२४	गु	८	शु	२३×	श	८	र	२२	र	६	सो	२०	सो	६✱	बु	१९	मं	४✱	गु	१८	गु	३	श	१७	श	२	र	१६/१७	र/सो	३१ नवम्बर	सो	१५✱	मं	३०×	बु	१५	गु	२९	गु
अष्टमी	X	X	१०	सो	२५	मं	८	मं	२४	गु	१०✱	गु	२५	शु	९	श	२३	श	९	सो	२३	सो	७	मं	२१	मं	७	गु	२०	बु	५	शु	१९	शु	४	र	१८	र	३	सो	१८	मं	१✱	मं	१६	बु	३० दिसम्बर	बु	१६	शु	३०	शु
नवमी	X	X	११	मं	२६	बु	९/१०	बु/गु	२५	शु	११	शु	२६✱	श	१०	र	२४	र	१०	मं	२४	मं	८	बु	२२	बु	८	शु	२१/२२	गु/शु	६	श	२०	श	५×	सो	१९	सो	४	मं	१९	बु	२	बु	१७/१८	गु/शु	१	गु	१७	श	३१	श
दशमी	X	X	१२	बु	२७	गु	११	शु	२६	श	१२/१३	श/र	२७	र	११	सो	२५	सो	११	बु	२५	बु	९	गु	२३	गु	९	श	२३	श	७	र	२१	र	५✱	सो	२०	मं	५	बु	२०	गु	३	गु	१९	श	२	शु	१८	र	X	X
एकादशी	X	X	१३	गु	२८	शु	१२	श	२७×	र	१४	सो	२८	सो	१२	मं	२६	मं	१२	गु	२६	गु	१०	शु	२४	शु	१०	र	२४✱	र	८	सो	२२	सो	६	मं	२१	बु	६	गु	२१	शु	४	शु	२०	र	३	श	१९	सो	X	X
द्वादशी	X	X	१४	शु	२९	श	१३	र	२७	र	१५	मं	२९	मं	१३	बु	२७	बु	१३	शु	२७	शु	११	श	२५	श	११	सो	२५	सो	९	मं	२३	मं	७	बु	२२	गु	७×	शु	२२	श	५	श	२१	सो	४	र	२०	मं	X	X
त्रयोदशी	जन.२०२२ १×	श	१५	श	३०	र	१४	सो	२८	सो	१६	बु	३०	बु	१४✱	गु	२८	गु	१४	श	२८	श	१२	र	२६	र	१२×	मं	२६	मं	१०	बु	२४/२५	बु/गु	८✱	गु	२३	शु	७	शु	२३	र	६	र	२२×	मं	५	सो	२१	बु	X	X
चतुर्दशी	१	श	१६	र	३१✱ फरवरी	सो	१५	मं	१ मार्च	मं	१७	गु	३१	गु	१५	शु	२९	शु	१५	र	२९	र	१३	सो	२७	सो	१२	मं	२७	बु	११	गु	२६	शु	९✱	शु	२४	श	८	श	२४	सो	७	सो	२२	मं	६	मं	२२	गु	X	X
पूर्णिमा/अमा.	२	र	१७	सो	१	मं	१६	बु	२	बु	१८	शु	१ अप्रैल	शु	१६	श	३०	श	१६	सो	३०	सो	१४	मं	२८	मं	१३	बु	२८	गु	१२✱	शु	२७	श	१०×	श	२५	र	९	र	२५✱	मं	८	मं	२३	बु	७/८	बु/गु	२३	शु	X	X

जैन व्रत एवं पर्व :

ऋषभदेव निर्वाण दिवस	– ३१ जनवरी, २०२२
पंचकल्याणक वार्षिक महोत्सव	– २५ से २७ फरवरी, २०२२
श्री ऋषभदेव जयन्ती	– २६ मार्च, २०२२
अष्टान्हिका :	(१) १० मार्च से १८ मार्च, २०२२
	(२) ६ जुलाई से १३ जुलाई, २०२२
	(३) १ नवम्बर से ८ नवम्बर, २०२२
श्री महावीर भगवान जयन्ती	– १४ अप्रैल, २०२२
श्री कानजीस्वामी जयन्ती	– २ मई, २०२२
अक्षय तृतीया	– ३ मई, २०२२
श्रुत पंचमी	– ४ जून, २०२२
वीर शासन जयन्ती	– १४ जुलाई, २०२२
टोडरमल महाविद्यालय स्थापना दिवस	– २४ जुलाई, २०२२
मोक्ष सप्तमी (पार्श्व. निर्वाण)	– ४ अगस्त, २०२२
रक्षा बन्धन	– १२ अगस्त, २०२२
सोलहकारण व्रत	– १३ अगस्त से १० सितम्बर, २०२२
दशलक्षण व्रत	– ३१ अगस्त से ९ सितम्बर, २०२२
पुष्पांजलि व्रत	– ३१ अगस्त से ४ सितम्बर, २०२२
सुगन्ध दशमी	– ५ सितम्बर, २०२२
रत्नत्रय व्रत	– ८ सितम्बर से १० सितम्बर, २०२२
अनन्त चतुर्दशी	– ९ सितम्बर, २०२२
श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली)	– २५ अक्टूबर, २०२२
श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस	– १५ नवम्बर, २०२२

× तिथि क्षय ✱ जैनव्रत एवं पर्व

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर	– १५ मई से ३ जून, २०२२
महाविद्यालय शिविर	– ३१ जुलाई से ७ अगस्त, २०२२
शिक्षण शिविर	– २ अक्टूबर से ९ अक्टूबर, २०२२

अनुज कुमार जैन 'ज्योतिर्विद' परामर्श सूत्र- 9837713598
अलीगंज, जिला-एटा (उ.प्र.) के सौजन्य से

(पृष्ठ 1 का शेष...)

कार्यक्रम के प्रमुख श्री अमृतलाल चुन्नीलालजी महेता, अनिलभाई ताराचन्दजी गांधी, राजूभाई वाड़ीलालजी शाह एवं प्रतीकभाई चन्द्रकान्तजी शाह रहे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित सचिनजी शास्त्री, चैतन्यधाम द्वारा किया गया।

३. आत्मार्थी ट्रस्ट (दिल्ली) : अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली की वसुन्धरा पर दसलक्षण महापर्व अत्यन्त उत्साह से मनाया गया। दैनिक कार्यक्रम में प्रात: श्रीदशलक्षण एवं योगसार परमागम विधान सम्पन्न हुआ। साथ ही बीच–बीच में विद्वानों द्वारा दशलक्षण एवं योगसार विधान के मर्म को भी समझाया गया।

दोपहर में बाल ब्र. पं. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद के समयसार पुण्य–पाप अधिकार पर एवं आध्यात्मिक सतगुरू श्री कानजीस्वामी के समयसार विषय पर सी.डी. प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि में पण्डित भूपेन्द्रजी शास्त्री, विदिशा द्वारा जिनेन्द्र भक्ति व सामायिक पाठ कराया गया। क्षमावाणी पर्व के अवसर पर पण्डित ऋषभजी शास्त्री, उस्मानपुर के प्रवचन एवं क्षमावाणी पर्व पर उद्बोधन प्राप्त हुआ।

४. मंगलायतन (अलीगढ़) : दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: श्री दशलक्षण महामण्डल विधान, पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं पूजन के निहित अर्थ को स्पष्ट करते हुए मंगलार्थियों द्वारा विशेष स्वाध्याय का लाभ मिला।

दोपहर में पण्डित सुधीरजी शास्त्री, मंगलायतन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के चतुर्थ अध्याय पर व्याख्यान एवं विदुषी कल्पनाबेनजी द्वारा श्री षट्खण्डागमजी की वाचना की गई।

रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् विदुषी कल्पनाबेनजी द्वारा दशलक्षण धर्म पर व्याख्यान एवं श्री समयसारजी ग्रन्थ की गाथाओं का उच्चारण किया गया। साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

५–६. दुबई व कोटा : अरिहन्त मित्र मण्डल एवं मुमुक्षु आश्रम के संयुक्त तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया। प्रात: श्री दशलक्षण पूजन एवं उसके सम्पूर्ण भाव को स्पष्ट करने वाले उद्बोधन के उपरान्त प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के एक–एक अध्याय के वाचन एवं व्याख्यान का लाभ मिला।

रात्रि में धर्म के दशलक्षण पर व्याख्यान के पश्चात् अद्भुत संगीतमयी बोध कथाओं की प्रस्तुती दी गई। साथ ही अनेक रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

पूजन, भक्ति, प्रवचन एवं कथा आदि सभी कार्यक्रम पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा के माध्यम से कराये गये।

७. टीकमगढ़ (म.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित सचिनजी, मंगलायतन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के प्रत्येक अध्याय का विवेचन किया गया।

रात्रि में बाल कक्षा, श्री जिनेन्द्र भक्ति के बाद जैनदर्शन के गौरवशाली इतिहास विषय पर पण्डित संयमजी शास्त्री, दिल्ली के प्रवचन एवं धर्म के दशलक्षण पर पण्डित सचिनजी, मंगलायतन के विशेष व्याख्यानों का लाभ मिला। 21 सितम्बर को आत्मार्थी कन्याओं एवं शाश्वत बालिकाओं द्वारा क्षमावाणी पर्व पर विशेष संगोष्ठी आयोजित की गई।

८. भिण्ड (म.प्र.) : दशलक्षण महापर्व के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के निर्देशन में पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री द्वारा प्रातः सामूहिक विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्यरत्न के प्रातःकाल समयसार की गाथाओं पर, दोपहर में चौसठ ऋद्धि के स्वरूप पर एवं सायंकाल रत्नाकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दसधर्मों पर विशेष व्याख्यान एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।

९. सिद्धायतन (द्रोणगिरि) : श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वाधान में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: श्री दशलक्षण महामण्डल विधान के पश्चात् बाल ब्र. पण्डित रवीन्द्रजी आत्मन् के स्वाध्याय का लाभ मिला।

दोपहर में पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन के उपरान्त पण्डित अर्पितजी शास्त्री, भिण्ड एवं बाल ब्र. पण्डित रवीन्द्रजी आत्मन् के प्रेरणादायक व्याख्यान हुए। रात्रि में श्री जिनेन्द्र भक्ति, बाल कक्षाएँ एवं पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् उपस्थित विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही अनेक ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

१०. इटारसी (म.प्र.) : श्री तारण समाज संगठन सभा इटारसी द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रथम दिन ध्वजबन्धन पूर्वक पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रमों में प्रात: श्री कमलबत्तीसीजी का नियमित पाठ तत्पश्चात् पण्डित आशीषजी शास्त्री द्वारा मंगल प्रवचनमालारोहण ग्रन्थ पर व्याख्यान हुए, जिसमें आत्मा तथा मोक्षमार्ग पर प्रकाश डाला गया। प्रवचन के उपरान्त वृहत मन्दिर विधि का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि में पण्डित आशीषजी शास्त्री द्वारा धर्म के दशलक्षण विषय पर व्याख्यान का लाभ मिला। साथ ही बालकों की दृष्टि से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

११. उदयपुर (राज.) : श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, नेमीनाथ कॉलोनी हिरण मगरी सेक्टर-३ में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: पूजन-विधान के उपरान्त डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, टोकर के क्रमनियमितपर्याय पर एवं सायंकाल जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों का लाभ मिला। साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

१२. विश्वास नगर (दिल्ली) : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भीम गली, विश्वास नगर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: श्री दशलक्षण विधान का आयोजन पण्डित मयंकजी शास्त्री, विश्वास नगर एवं पण्डित अमनजी शास्त्री, शंकर नगर के सहयोग से हुआ। इस अवसर पर पण्डित मनोजजी करेली के प्रात: धर्म के दशलक्षण एवं रात्रि में समयसार के कर्ताकर्म अधिकार पर व्याख्यानों का लाभ मिला। साथ ही ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

पण्डित रवीन्द्रजी नरसाई का तूफानी दौर

टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थी पण्डित रवीन्द्र जिन्नप्पा नरसाईजी ने जवाहर नवोदय विद्यालय के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात् कर्नाटक में धर्म प्रचार की कमान को संभाल लिया।

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर उनके द्वारा कर्नाटक के सत्तूर और बन्निकोप्प ग्रामों में प्रवचनों का आयोजन किया गया। उन्होंने अपनी सेवावधि में जैनधर्म का न केवल स्वयं पालन किया; अपितु सहस्राधिक छात्रों में भी जैनधर्म के सिद्धान्तों का बीजारोपण किया। अध्यापक, कर्मचारी एवं अभिभावकों को शाकाहारी बनाया। इस दौरान स्थानीय समाज द्वारा उनका सम्मान किया गया। सम्मान स्वीकार करते हुए उन्होंने अपने जीवन को दिशानिर्देश देने वाले टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का स्मरण करते हुए कहा कि महाविद्यालय में सीखे हुए सिद्धांतों को अपनाना, उनका पालन और प्रचार-प्रसार करना ही मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। **- बाहुबली भोसगे**

वैराग्य समाचार

देऊलगांवराजा निवासी श्रीमती कौसल्याबाई लालचंदजी बण्ड का शनिवार, दिनांक ११ सितम्बर २०२१ को शान्त परिणामों के साथ देहपरिवर्तन हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित उमाकान्तजी बण्ड की मातुश्री हैं, तत्त्वज्ञान के प्रति आपकी सक्रियता अनुकरणीय है। दिवंगत आत्मा परमपद को प्राप्त करे- यही कामना है।

हुए हैं ना होंएगें मुनीन्द्र कुन्दकुन्द से

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट एवं मातृभाषा उन्नयन संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 30 अगस्त 2021 को जैनवाङ्मय में आचार्य कुन्दकुन्द के योगदान पर विमर्श का आयोजन किया गया। आचार्य कुन्दकुन्द के गहन अध्येता डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित इस परिचर्चा के मुख्यवक्ता अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के अतिरिक्त जैनशोध संस्थान, दिल्ली के निर्देशक डॉ. विजयकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर, राष्ट्रपति सम्मानित डॉ. श्रेयांशजी जैन, बड़ोत एवं आचार्य कुन्दकुन्द पी.जी. कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ रहे।

सत्र का संचालन पण्डित अंकुरजी शास्त्री, भोपाल एवं मंगलाचरण ऐनी जैन, जयपुर ने किया।

प्रवेश प्रारम्भ

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी एवं जैनविद्या संस्थान जयपुर द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय मान्यता प्राप्त प्राकृत, अपभ्रंश, जैनदर्शन एवं संस्कृत पाठ्यक्रमों के सर्टिफिकेट दिए जाते रहे हैं।

आगामी सत्र में उक्त चारों पाठ्यक्रमों की अवधि 1 जनवरी से 31 दिसम्बर 2022 तक है। अध्ययन के इच्छुक विद्यार्थी इस अवसर का अवश्य लाभ लेवें। प्रवेश प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 15 मार्च 2022 तक है।

स्थान :- 5-6 संस्थानिक क्षेत्र, गुरूनानक पथ, हरी मार्ग मालवीय नगर, जयपुर 302017, **फोन नंबर :-** 9413417690

अंक प्रकाशन सहयोग

जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक) पत्रिका के सितम्बर (द्वितीय) 2021 के प्रकाशन हेतु श्रीमान प्रमोदजी जैन, विदिशा एवं श्रीमती अनीताजी गांधी, मुंबई द्वारा 5100-5100 रूपये की राशि सहयोग के रूप में प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद!

जैन पथप्रदर्शक परिवार आपकी भावना की अनुमोदना करते हुए आभार व्यक्त करता है।

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित वीतराग विज्ञान (मासिक) व जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक) पत्रिकाओं सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने व समस्याओं के समाधान के लिए सम्पर्क करें-

अखिल जैन शास्त्री :- 7412078704

Email :- veetragvigyanjpp@gmail.com

02 अक्टूबर 2021, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

दिल्ली में क्षमावाणी पर्व सानन्द सम्पन्न

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, दिव्यदेशना ट्रस्ट एवं ब्राह्मी-सुन्दरी विद्यानिकेतन के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, दिल्ली एन.सी.आर. द्वारा आयोजित क्षमावाणी महापर्व पर मंगलवार २१ सितम्बर को दिल्ली, फरीदाबाद, मेरठ, खतौली आदि स्थानों से पधारे सैकड़ो साधर्मियों की उपस्थिति में सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री के मांगलिक प्रवचन के साथ समारोह प्रारम्भ हुआ। इस अवसर अन्तर्राष्टीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर का परोक्ष रूप से क्षमावाणी पर एवं ख्यातिप्राप्त युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के प्रत्यक्ष रूप से समयसार की छटवी गाथा पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही स्थानीय विद्वानों में डॉ. सुदीपजी शास्त्री, दिल्ली व डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ का उद्बोधन भी प्राप्त हुआ।

सभा के अध्यक्ष श्रीमान प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, मुख्य अतिथि माननीय श्रीमान सतेन्द्रजी जैन (स्वास्थ्य मंत्री दिल्ली सरकार) विशिष्ट अतिथि डॉ. सरबजीतजी शर्मा (Central Government Senior Counsel) का विशेष समागम प्राप्त हुआ।

समारोह के ध्वजारोहणकर्ता श्री अजितप्रसादजी वैभव जैन परिवार, मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री मनीषजी सूरजमलजी विहार, सह-आमंत्रणकर्ता श्री वज्रसेनजी शोभितजी जैन विश्वासनगर, मंच उद्घाटनकर्ता श्री सुभाषजी जैन बाहुबली के अतिरिक्त पंचपरमागम विराजमानकर्ता व चित्र अनावरणकर्ता परिवार भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर ब्राह्मी सुंदरी कन्या विद्या निकेतन की ओर से श्रीमान प्रेमचंदजी बजाज कोटा का अभिनन्दन किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा के संचालन व पण्डित सुरेन्द्रजी शास्त्री के संयोजन में सम्पन्न हुआ।

अपनों से अपनी बात....

कुशल वक्ता व लेखक कैसे बनें?

ज्ञानोदय भोपाल के सौजन्य से दिनांक २६ सितंबर २०२१ को आयोजित अपनों से अपनी बात के अंतर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने बताया कि कुशल वक्ता वही है, जो सभी सभाओं में अपना श्रेष्ठ वक्तव्य दे सके। चाहे वह सभा मुमुक्षुओं, दिगम्बरों, तेरापंथियों की हो, या फिर श्वेतांबर या अजैनों की ही क्यों ना हो। उन सभाओं में भी अपने सिद्धान्तों से भटकना नहीं और उनका विरोध भी नहीं करना। जैसे क्रमबद्धपर्याय सिद्धान्त को हम हिन्दु, मुसलमान, ईसाई आदि सभी के बीच तर्क युक्ति से समझा सकते है। अच्छे वक्ताओं के गुण बताते हुए उन्होनें अपने जीवन के अनेक अनुभवों को सभा के साथ सांझा किया।

अच्छे लेखक के गुण वताते हुए उन्होनें कहा कि कुशल लेखक वही है, जिसकी किताबों को पक्ष-विपक्ष के सभी विद्वानों की सहमति प्राप्त हो। हिंदू, मुस्लिम, श्वेताम्बर सभी सम्प्रदाय विशेष के लोग जिसे बिना राग-द्वेष के पढ़ सकें।

यदि हम अपने वक्तव्य को मुमुक्षु समाज, सकल दिगम्बर समाज, श्वेताम्बर समाज एवं हिन्दू सभा में एक समान मूल सिद्धन्त समझाने में सफल हो गए तो समझना कि हम कुशल वक्ता हैं।

वस्तुत: बात तो यह है कि कुशल लेखक या वक्ता एक दिन या ५ वर्ष में नहीं बना जा सकता, उसके लिए जीवन को इसी कार्य में समर्पित करना पढ़ता है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2021

प्रति,